कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन

दिनांक

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

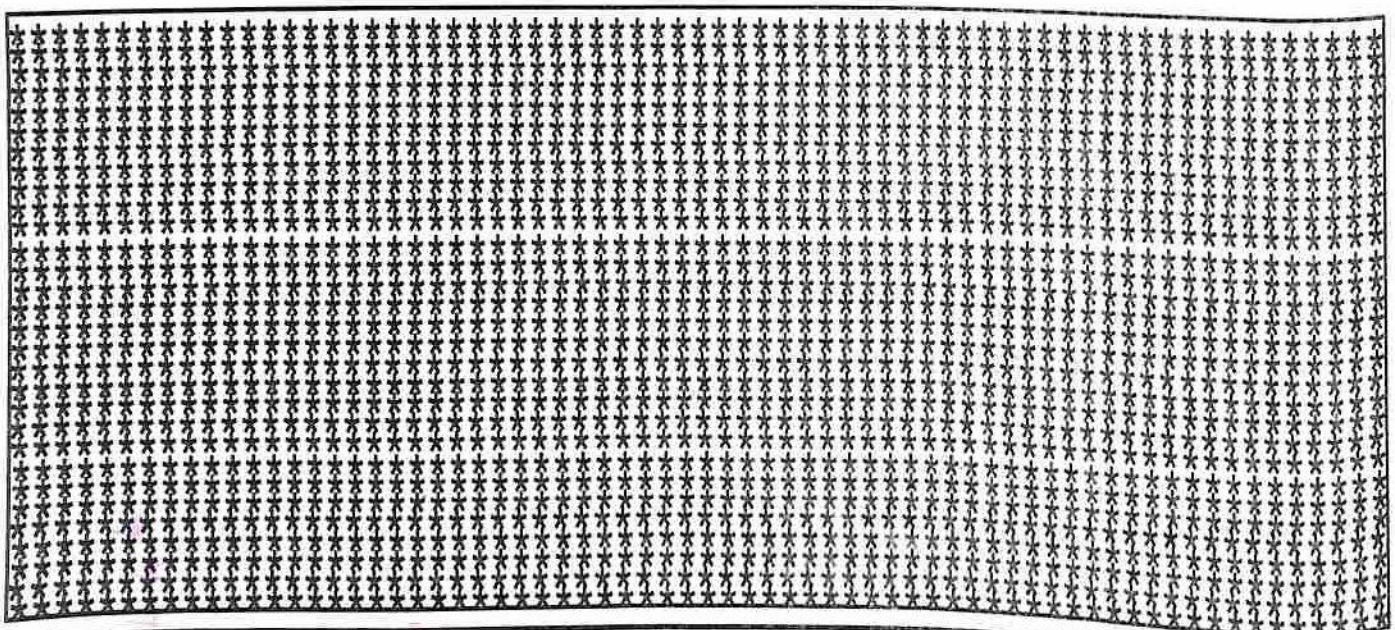

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(1) 'कबीरदास'

(2) कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

(3) धर्म के विषय में कबीर का दृष्टिकोण समन्वयवादी था। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम के बीच समन्वय की धारा प्रवाहित कर दोनों को ही शीतलता प्रदान की। उन्होंने धर्म की बुराइयों को निकालकर सबके सामने रखा।

(4) भारतवासियों के प्रति कवि आक्रोशित है क्योंकि भारतवासी अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए जागरूक नहीं हैं। वे वीरता का प्रदर्शन नहीं करके कायरता दिखा रहे हैं।

(5) जब वीरता समाप्त हो जाती है तब पुण्य का क्षय एवं स्वार्थ का उदय होता है।

(6) कवि ने तलवार को धर्मपालक कहा है अर्थात् वीरता और साहस के बल पर ही धर्म का पालन किया जा सकता है। धर्म के सभी पुण्य वीरता से ही प्राप्त करना सम्भव है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(7) (ख) **राजस्थान में महराता जल संकट**

(i) प्रस्तावना :- जल का जीवन में बहुत महत्व है। मानव, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि सभी सजीवों की जैविक क्रियाएँ जल से ही संचालित होती हैं। जल का उपयोग नहाने-धोने, उद्योगों, कृषि आदि कार्यों में भी किया जाता है। अतः कहा जा सकता है - 'जल ही जीवन है'।
राजस्थान राज्य का अधिकांश भाग मरूप्रदेश है। राजस्थान में मरूस्थल के कारण प्राचीन समय से ही जलसंकट की समस्या रही हैं। वर्तमान में मानव के द्वारा जल के अतिदोहन के कारण यह समस्या और बढ़ गई है।

(ii) जल संकट के कारण :- राजस्थान में वर्ष के अधिकांश समय वर्षा का अभाव रहता है। पेड़-पौधे आदि वनस्पति की कमी के कारण पानी अधिक वाष्पित नहीं होता है और वर्षा भी नहीं होती है। भारत में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून सर्वत्र वर्षा करता है लेकिन राजस्थान में अरावली पर्वत श्रृंखला का विस्तार दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के समान्तर होने के कारण यहाँ इससे वर्षा नहीं होती है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक जल स्रोतों के अतिदोहन, प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्रों की उपेक्षा, वनोन्मूलन, मरूस्थलीकरण आदि भी पानी की कमी के लिए उत्तरदायी हैं। जल का प्रदूषण भी हो रहा है, जो कि जल संकट का एक प्रमुख कारण है। जल संकट के कारण राजस्थान का जन-जीवन प्रभावित हो रहा है। इससे अकाल तथा सूखा भी रहता है।

परीक्षार्थी उत्तर

(iii) जल संकट निराकरण के उपाय :- राजस्थान में जल संकट का निराकरण करने के लिए सभी का सहयोग परम आवश्यक है। जल संकट से बचाव के लिए वृक्षीकरण कार्यक्रम तथा जल प्रदूषण निराकरण कार्यक्रम चलाया जाना आवश्यक है। इसके साथ ही ~~जल~~ वर्षा जल के संग्रहण के लिए परम्परागत जल ग्रहण क्षेत्र जैसे- टाँका, खड़ीन, बावड़ी, नाड़ी, तालाब आदि का निर्माण भी आवश्यक है। जल संकट से बचाव के लिए सरकार ने कई प्रयास भी किए हैं जैसे- 'मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना' प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत जलग्रहण क्षेत्रों में सुधार करना, कुएँ, तालब, टाँके आदि खुदवाना, छोटे-छोटे एनीकट, बाँध, स्ट्रेगर्ड ट्रेन्चेज आदि बनवाना शामिल है। इसी प्रकार राजस्थान में इन्दिरा गाँधी नहर के आने से भी जल संकट की ~~समस्य~~ समस्या दुर हुई है।

(iv) उपसंहार :- राजस्थान में गहरा रहे जल संकट के निराकरण से ही यहाँ का जन-जीवन खुशहाल बनेगा और प्रदेश प्रगति कर सकेगा। यहाँ जल संकट से बचाव के लिए सरकारी ~~प्र~~ प्रयासों के साथ-साथ जन-सहयोग भी अपेक्षित है। यदि जन-भागीदारी मिलेगी तो इस समस्या से बचाव संभव है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

(8)

परीक्षार्थी उत्तर

पत्र क्रमांक : 13/2018 दिनाङ्क : 17/03/2018

प्रेषक :
दीपक शर्मा
शर्मा बुक डिपो,
रतलाम

सेवा में,
श्रीमान् प्रबन्धक महोदय,
पुस्तक महल,
नई दिल्ली

महोदय,

विश्व पुस्तक मेला, 2017 में आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के अवलोकन का अवसर मिला। पूर्व में भी आपकी पुस्तकों की लोकप्रियता और श्रेष्ठ स्तर के बारे में सुना था। मैं ~~लक्ष्मीनगर~~ नई सड़क, रतलाम में पुस्तक विक्रय करता हूँ। मैं अपनी दुकान के माध्यम से अपने क्षेत्र के विद्यार्थियों को आपकी पुस्तकों से लाभान्वित करना चाहता हूँ। अतः ~~मार्च~~ 20 फरवरी 2018 के बाद आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का सूची-पत्र (मूल्य सहित) यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

भवदीय
दीपक
शर्मा बुक डिपो,
नई सड़क~~लक्ष्मीनगर~~, रतलाम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(9) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं-
(i) सकर्मक क्रिया (ii) अकर्मक क्रिया

(i) सकर्मक क्रिया - जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे- सीता गाना गाती है।

(ii) अकर्मक क्रिया- जिस क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है क्योंकि वाक्य में कर्म प्रयुक्त नहीं होता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे- सोहन रोता है।

(10) "राधा: केने मिठाई खाई।"
'राधा ने' अत: इसमें कर्ता कारक है।
'मिठाई खाई' इसमें भूतकाल है।
'मिठाई खाई' इसमें क्रिया 'खाई' कर्म 'मिठाई' के अनुसार प्रयुक्त हो रही है। अतः इसमें कर्मवाच्य है।

(11) बहुब्रीहि समास- जिस समास में पूर्व पद व उत्तर पद दोनों ही गौण होते हैं और अन्य पद प्रधान होता है, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।
उदाहरण- पीताम्बर - पीले हैं वस्त्र जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण
लम्बोदर - लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश
शूलपाणि - शूल है पाणि में जिसके अर्थात् शिव
दशानन - दश आनन हैं जिसके अर्थात् रावण

परीक्षक द्वारा | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(12) (क) ~~धो~~ धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।

(ख) सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।

(13) (क) बालू से तेल निकालना - असंभव कार्य को अंजाम देना।

(ख) अंधे की लाठी होना - एकमात्र सहारा।

(14) चट मंगनी पट ब्याह - तुरन्त कार्य सम्पादित करना।

(15) प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित 'प्रभो!' शीर्षक कविता से लिया गया है। यह कविता कवि जयशंकर प्रसाद के स्फुट कविताओं के संग्रह 'कानन कुसुम' से संकलित है। इसमें कवि को प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का अनन्त प्रसार दृष्टिगत होता है। इसमें कवि ने ईश्वर की सर्वव्यापकता, शक्तिमता और उसके अनन्त प्रसार का वर्णन किया है।

व्याख्या - कवि कहता है कि यदि किसी को ईश्वर का रात में दीपमालाओं से दमकता हुआ विशाल मन्दिर देखना है तो उसे विशाल आकाश में चमकते असंख्य तारों को देखना चाहिए। तारों का प्रकाश ही ईश्वरीय प्रकाश का द्योतक है। कवि ईश्वर को सम्बोधित करते हुए कह रहा है कि हे प्रभो! तुम सभी प्राणियों पर प्रेम की वर्षा करने वाले हो। तुम सम्पूर्ण प्रकृति रूपी कमलिनी को खिलाने वाले, परम प्रसन्नतामय बनाने वाले

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

सूर्य हो। तुम ही इस अनन्त सृष्टि रूपी उपवन के रक्षक हो यह पूरी धरती पुकार कर कह रही है। हे दया के भण्डार परमप्रभु! आपकी कृपा होने पर मन की सभी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। सभी लोग यह कह रहे हैं। यही बात मुझे आशा दिला रही है कि आपकी दया होने से मेरे मनोरथ पूर्ण हो जाएँगे।

(16) प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' में संकलित 'ईर्ष्या! तू न गई मेरे मन से' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है। यह पाठ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'अर्द्धनारीश्वर' पुस्तक से लिया गया है। इसमें लेखक ने मानव चरित्र की सबसे भयावह बुराई ईर्ष्या के बारे में बताया है।

व्याख्या- लेखक कहता है कि ईर्ष्यालु मनुष्य अपने पास उपलब्ध वस्तुओं से खुश होकर ईश्वर को धन्यवाद नहीं देता। वह अपने साधनों से आनन्द नहीं लेता बल्कि यह सोचता रहता है कि इससे भी अधिक साधन या वस्तुएँ क्यों नहीं मिली? वह दूसरों की के पास उपलब्ध वस्तुओं से जलता है और चिन्ता में निमग्न रहता है। यह ईर्ष्यालु मनुष्य का ऐसा दोष है जो उसके चरित्र को और गिरा देता है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और अपने पक्ष के अभावों के बारे में सोचता रहता है। वह अपनी उन्नति के रचनात्मक तरीके को भूल जाता है और दूसरे की अवनति करना चाहता है। वह दूसरों को हानि पहुँचाकर उनसे आगे निकलना चाहता है। वह अपनी उन्नति के लिए परिश्रम नहीं करता है। लेकिन मनुष्य की उन्नति तभी होती है जब वह अपने चरित्र को निर्मल करे तथा गुणों का विकास करे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(17) पहली कियां उपाव, दव दुसमण आमय दटै।
प्रचंड हुआं विसवाव, रोभा घालै राजिया।।

उपर्युक्त सोरठे के माध्यम से कवि कृपाराम खिड़िया कहना चाहते हैं कि मनुष्य को दावा दवाग्नि अर्थात् जंगल की आग, शत्रु और रोग से बचने का उपाय पहले ही कर लेना चाहिए क्योंकि प्रचण्ड होने पर इन पर नियंत्रण पाना कठिन होता है और ये अत्यन्त कष्टकारी हो जाते हैं। दवाग्नि अर्थात् जंगल की आग एक बार फैलने पर एक बड़े क्षेत्र को भस्म कर डालती है। यदि उसे प्रारम्भिक अवस्था में ही नियंत्रित कर दिया जाए तो ही बचाव सम्भव होता है। इसी प्रकार शत्रु पर भी प्रारम्भिक नियंत्रण जरूरी है। रोग की भी प्रारम्भिक अवस्था में पहचान करके चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए नहीं तो रोग बढ़ने पर बच पाना मुश्किल होता है। यही व्यावहारिक सीख कवि इस सोरठे के माध्यम से देना चाहता है। दवाग्नि, शत्रु और रोग तीनों का ही स्वभाव या प्रकृति एक ही प्रकार की होती है जो प्रचण्ड होने पर कष्ट ही देती है। अतः इनसे बचने का हरसम्भव प्रयास करना चाहिए।

(18) लोक संत पीपा निर्गुण भक्ति काव्यधारा के प्रमुख सन्त थे। पीपा पहले मूर्ति पूजक राजा थे। वे देवी दुर्गा के उपासक थे। लेकिन बाद में गुरु रामानन्द गुँसाई के प्रभाव से पीपा निर्गुण, निराकार परम ब्रह्म की उपासना करने लगे। उनका मानना था कि "यह जो पंचतत्व शरीर है यही प्रभु है। शव शरीर में जो आत्मा

है वही परमात्मा है। पूजन की सब सामग्री शरीर में है। सच्चे गुरु की कृपा होने पर शरीर से सबकुछ प्राप्त किया जा सकता है।" यह शरीर और संसार उन्हें मिथ्या लगने लगा था। वे आत्मा और परमात्मा को एक ही मानते थे। सन्त पीपा ने अपनी भक्ति साधना के द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग के हृदय में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता भर दी। वे जगह-जगह भ्रमण पर निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देते थे। उन्होंने कबीर की परम्परा का अनुसरण करते हुए निर्गुण भक्ति काव्यधारा में अपना अमूल्य योगदान देकर उसे समृद्ध किया। उनके अनुसार-"ईश्वर का कोई आकार नहीं है वह निराकार है ईश्वर अजन्मा है।" उन्होंने निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देकर मूर्तिपूजा का खण्डन किया है और निर्गुण भक्तिधारा का प्रचार-प्रसार किया।

(19) गोपियाँ कृष्ण के रूप-सौन्दर्य रूपी रस के लालच से कृष्ण की दासी ही बन गईं। गोपी की आँखें श्रीकृष्ण के प्रेम-रस में विवश होकर फँस गईं और निकालने का यत्न करने पर भी नहीं निकलीं। इस प्रकार गोपियों की आँखें श्रीकृष्ण के रूप रस में मुग्ध होकर उसकी दासी बन गईं।

(20) 'कल और आज' कविता में नागार्जुन ने ग्रीष्म की तपिश भरी दुरुहता के पश्चात् वर्षा ऋतु के मनभावन आगमन का वर्णन किया है। ग्रीष्म ऋतु में खेती के सूख जाने से हताश किसान, वर्षा ऋतु के आगमन की सूचना देती धूल में नहाती गौरैया, उदास और बदरंग आसमान आदि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ग्रीष्म ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य को बताते हैं। इसके बाद वर्षा ऋतु आने से सजल बादलों से घिरा आकाश, खुशहाल किसान, झींगुरों की ध्वनि, मोरों का नृत्य करना और कूकना, बारिश की बूंदों का बरसना आदि से वर्षा ऋतु का सहज और मनभावन वर्णन किया है। इससे कवि का ऋतुओं का सूक्ष्म परीक्षण दृष्टिगत होता है।

(21) 'कन्यादान' कविता में कवि ने कन्या विवाह के समय बेटी के भोलेपन और सरलता तथा माता की चिन्ताओं को बताया है। समाज द्वारा स्त्री के लिए आचरण सम्बन्धी प्रतिमान गढ़ लिए जाते हैं। वे आदर्श न होकर बन्धन होते हैं। माँ बेटी को इन्हीं आदर्शों से हटकर सीख दे रही है। वह चाहती है कि उसकी बेटी ससुराल में कभी हताश-निराश न हो और लड़की होना अपनी कमजोरी न समझे। वह स्वाभिमान के साथ जीवन बिताए। इस प्रकार कन्यादान कविता में कवि की स्त्री जीवन के प्रति सहानुभूति व्यक्त हुई है।

(22) 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबन्ध लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की विनोद प्रिय शैली का प्रतिनिधि उदाहरण है। इसमें हास्य व्यंग्य पूर्ण शैली का प्रयोग किया गया है। स्थान-स्थान पर हास्य और व्यंग्य का प्रयोग भाषा की रोचकता बढ़ाने के लिए किया गया है। इस निबन्ध में लेखक ने तत्कालीन समाज की स्वार्थपरता, अज्ञानता, भ्रष्टाचार आदि पर कठोर व्यंग्य प्रहार किए हैं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

जैसे - पण्डित प्राणांतक प्रसाद के बारे में टिप्पणी तत्कालीन वैद्यों पर कठोर व्यंग्य है। उन्होंने भाषा में लालित्य बढ़ाने के लिए मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है।

(23) 'गौरा' गाय की लेखिका के घर पर पहले दूध देने वाले ग्वाले ने गुड़ में लपेटकर सुई खिला दी थी। ऐसा ग्वाले ने अपने स्वार्थ के कारण किया। वह सुई अब रक्तसंचार के साथ गाय के हृदय की ओर बढ़ रही थी जब सुई ने हृदय को बेधकर बन्द कर दिया तब गौरा की मृत्यु हो गई।

(24) हामिद की बूढ़ी दादी अमीना जब रोटी सेकती थी तो उसके हाथ जल जाते थे। हामिद के पास केवल तीन रुपये थे। अतः ईदगाह में भी उसने अपनी इच्छा पर संयम रखते हुए अपनी बूढ़ी दादी का ध्यान रखा और उसके लिए चिमटा खरीदा।

(25) 'दामिनी दमक, सुर चाप की चमक' पंक्ति में सेनापति सेनापति ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है।

(26) 'मातृ-वन्दना' कविता में कवि ने अपने श्रम का श्रेय मातृभूमि भारत को दिया है।

(27) कन्याकुमारी में त्रिय तीनों सागरों के संगम स्थल पर स्थित चट्टान पर विवेकानन्द जी ने समाधि लगाई थी। और वहाँ पर एक विशाल मन्दिर स्थित है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(28) परनिन्दा के विषय में दादू ने कहा था कि परनिन्दा नहीं करनी चाहिए क्योंकि परनिन्दा तो वही व्यक्ति करता है जिसके हृदय में ईश्वर का वास नहीं होता है।

(29) तुलसीदास

तुलसीदास का जन्म संवत् 1589 को उत्तरप्रदेश के राजापुर में हुआ था। इनके पिता आत्माराम और माता हुलसी थीं। तुलसी अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा हुए थे। जन्म के समय इनकी अवस्था पाँच वर्ष के बालक जैसी थी। भय के चलते माता-पिता ने इन्हें मुनिया दासी को दे दिया। तुलसीदास के गुरु का नाम नरहरिदास बताया जाता है। इनकी पत्नी रत्नावली विदुषी थी। इन्होंने अयोध्या में संवत् 1631 में रामचरितमानस की रचना प्रारम्भ की। जो बाद में ये काशी आकर रहने लगे। जीवन के अन्तिम दिनों में पीड़ा शान्ति के लिए हनुमान की स्तुति की जो 'हनुमान बाहुक' के नाम से प्रसिद्ध है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ - कवितावली, दोहावली, गीतावली, रामाज्ञा प्रश्न, रामचरितमानस, वैराग्य संदीपनी, बरवैरामायण, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, विनय पत्रिका आदि हैं।

तुलसी आदर्शवादी कवि थे। ये अवधी और ब्रजभाषा दोनों के पंडित थे। इनकी मृत्यु गंगा नदी के तट पर 1680 (संवत्) में हुई थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

मुन्शी प्रेमचन्द

हिन्दी जगत में 'कलम के सिपाही' के नाम से मशहूर मुन्शी प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। सरकारी नौकरी से इस्तीफा देने के बाद इन्होंने अपना सारा जीवन लेखन कार्य के प्रति समर्पित कर दिया। ये उर्दू में नवाबराय के नाम से लेखन कार्य करते थे। बंगाल उपन्यास के क्षेत्र में इनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय ने इन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहकर सम्बोधित किया। इन्होंने अपने साहित्य में किसानों दलितों नारियों की वेदना और वर्ण व्यवस्था की कुरीतियों का मार्मिक चित्रण किया है।

इनका पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' नाम से आया जो 1908 में प्रकाशित हुआ। यह देशभक्ति से ओतप्रोत था।

प्रमुख रचनाएँ

कहानी - मानसरोवर (आठ खण्ड)

उपन्यास - निर्मला, प्रेमाश्रम, सेवासदन, रंगभूमि, गोदान, गबन।

निबन्ध - कर्बला, संग्राम

पत्रिकाएँ - माधुरी, हंस, मर्यादा, जागरण।

परीक्षक द्वारा | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(30) (i) ओवर टेक निषेध है।

(ii) गाड़ी रोकना निषेध है।

(iii) आगे दायें मोड़ निषेध है।

(iv) एक ही तरफ रास्ता (आगे की ओर)

× समाप्त ×